डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान

11–अशोक रोड, नई दिल्ली
www.indiannationalism.org

विशेष वीर–स्मरण मालिका– **चुशूल के वीर**

चुशूल के वीरों को शत्–शत् नमन

मुख्य वक्ता —ले. जन. पी. एन. कठपालिया, **पीवीएसएम, एवीएसएम**
वक्तागण —ले. जन. एन. एस मलिक, **पीवीएसएम, पूर्व उपसेनाध्यक्ष**
—ब्रिगेडियर आर. बी. शर्मा, **वीएसएम**
—श्री केदारनाथ साहनी, **अध्यक्ष–डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान**
—श्री तरूण विजय, **निदेशक–डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान**
दिनांक —मंगलवार, 18 नवंबर 2008
समय —सायं 4.30 बजे
स्थान —कान्स्टीट्यूशन क्लब, नई दिल्ली

मंच पर (बाएं से दाएं) बिग्रेडियर आर.बी. शर्मा, श्री मदनदास देवी, ले.जन. पी.एन. कठपालिया, श्री केदार नाथ साहनी, ले.जन. एन.एस. मलिक, श्री तरूण विजय और सुश्री रामी देसाई (मंच संचालन)

मंगलवार, 18 नवम्बर को 1962 के भारत–चीन युद्ध की 46वीं वर्षगांठ के अवसर पर लद्दाख के चुशूल में शहीद हुए शूरवीरों को नमन करने के लिए नई दिल्ली स्थित कान्स्टीट्यूशन क्लब में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान और कान्क्लेव ऑफ डिफेन्स सर्विसेज वेटेरन्स द्वारा एक समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें चुशूल के पास रज़ांगला में हुए युद्ध के हीरो परमवीर चक्र विजेता मेजर शैतान सिंह और उनके साथ शहीद हुए 114 वीरों को याद किया गया। इस कार्यक्रम में पूर्व सैन्य अधिकारियों एवं विशिष्ट लोगों ने भारत–चीन युद्ध और उस समय भारत के प्रधानमंत्री पं. नेहरू की उन नीतियों पर चर्चा की जिनके कारण भारत को 1962 में चीन से युद्ध का सामना करना पड़ा था। इस कार्यक्रम का एक आकर्षण का केन्द्र था– 'रजांगला वीर स्मारक एवं चुशूल गांव पर स्लाइड–शो' जिसे हाल ही में लद्दाख एवं चुशूल की यात्रा पर गए वरिष्ठ पत्रकार श्री तरूण विजय ने प्रस्तुत किया।

परिचर्चा में मुख्य रूप से मिलिट्री इन्टेलिजेन्स के पूर्व महानिदेशक एवं कुमाऊं रेजिमेन्ट के कर्नल–कमान्डेन्ट ले.जन. पी.एन. कठपालिया, श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान के अध्यक्ष श्री केदार नाथ साहनी, ले.जन. एन.एस. मलिक, बिग्रेडियर आर.बी. शर्मा, जनरल जैकेब, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह–सरकार्यवाह श्री मदनदास देवी, वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक श्री तरूण विजय, आचार्य गिरिराज किशोर, लद्दाख के नेता पूज्य लामा लोबजांग मुख्य रूप से उपस्थित थे। साथ ही पूर्व उपराज्यपाल श्री एन.एन. झा, ले.जन. आर. पी. अग्रवाल, ले.जन. शहरावत, मेजर जनरल गौर, बिग्रेडियर के. एन. सिंह, बिग्रेडियर

गुलिया, कर्नल ए.आर. खान, ग्रुप कैप्टन विजय वीर तथा मेजर कैप्टन सी.एम. व्यास, भारतीय नौसेना विंगकमांडर नागपाल, रोहित सेठी, वीर चक्र सहित अनेक वरिष्ठ सेनानियों ने भी शहिदों को भावांजली दी।

परिचर्चा सत्र का उद्घाटन करते हुए ले.जन. एन. एस. मलिक ने कहा कि आज हम रजांगला युद्ध के वीरों को 46 सालों में पहली बार स्मरण कर रहे हैं अन्यथा भारत की राजधानी में तो सिर्फ हमारे राजनीतिज्ञों और विचारकों की जयन्ती और पुण्यतिथि मनाई जाती है। जन. मलिक ने भारत की आजादी के बाद के सभी पांच युद्धों का जिक्र करते हुए कहा कि हम कागजों पर तो सिर्फ एक ही युद्ध में हारे लेकिन वास्तव में हमने गन्दी राजनीति के चलते सभी पांचों युद्धों में समप्ति चर्चा में पीछे रहें। उन्होंने कहा कि जिन चार युद्धों में हम जीते उनसे काफी अलग परिस्थिति में चीन से युद्ध हुआ था और वह भी उस समय जब हम लड़ने के लिए मानसिक और सैद्धान्तिक रूप से तैयार नहीं थे। जनरल मलिक ने 1962 के युद्ध में चीन से परास्त होने हेतु उस समय की पं. नेहरू की सरकार को जिम्मेदार ठहराते हुए कहा कि मिलिट्री के बार–बार आग्रह करने के बाजवूद नेहरू ने सेना को मजबूत करने का कोई ठोस प्रबंध नहीं किया था।

उन्होंने 7 नवंबर 1950 को सरदार पटेल द्वारा चीनी हमले की आशंका के मद्देनहर नेहरू को लिखे गये पत्र की चर्चा करते हुए कहा कि अगर पं. नेहरू ने उस पत्र पर उसी समय अमल किया होता तो बात कुछ और होती। उन्होंने कहा कि इन बारह वर्षों में चीन ने अपनी सेना को सशक्त किया और हम 'हिन्दी चीनी भाई–भाई' के मायावी नारे को लेकर आखिरी दम तक शान्ति का गीत गाते रहें। इन सब तथ्यों के बावजूद हम क्यों यह मान लेते हैं कि हम युद्ध में पराजित हुए थे? वास्तव में हमारी राष्ट्रीय राजनीति पूरी तरह विफल साबित हुई थी। जनरल मलिक ने कहा कि यह हमारे लिए दुर्भाग्य की बात है कि पं. नेहरू की नीतियों के कारण सैनिकों को शर्मिन्दगी का सामना करना पड़ा। उन्होंने लद्दाख जैसे पर्वतीय क्षेत्रों में वायुसेना के प्रयोग न करने पर सरकार के फैसले पर प्रश्नचिन्ह खड़ा किया और कहा कि चुशूल में जो मिलिट्री टैंक प्रयोग किये गये थे, वो वहां पर प्रयोग में लाना संभव नहीं था। जनरल मलिक ने शोध अधिष्ठान के निदेशक तरूण विजय को चुशूल और रजांगला के इलाकों का दौरा करने और संबंधित तथ्यों का संकलन करने के लिए धन्यवाद दिया।

विषय प्रर्वत्तन करते हुए ब्रिगेडियर आर.बी. शर्मा ने 1962 भारत–चीन युद्ध को राष्ट्रीय शर्म की संज्ञा देते हुए कहा कि जब भारत के लौह पुरूष सरदार वल्लभ भाई पटेल ने 1950 में नेहरू को चीनी आशंकाओं के मद्देनजर पत्र लिखा तभी से चीन हथियार बनाने के प्रयास में जुट गया और हम शांति के प्रयास में। ब्रिगेडियर शर्मा ने सरदार पटेल के उस पत्र का विस्तृत जिक्र किया जिसमें उन्होंने नेहरू से कहा था कि कम्युनिस्ट चीन में मित्रता की भावना नहीं दिखाई देती और चीन अपने संचार के साधनों को हमारे इलाकों में स्थापित कर रहा है तथा सीमावर्ती इलाकों में रोड बना रहा है। लेकिन पं. नेहरू ने इन बातों पर तनिक भी ध्यान नहीं दिया, बल्कि वो लगातार आर्मी को कम करने के प्रयास करते रहे और 'हिन्दी चीनी भाई–भाई' का जाप करते रहें इन सब चेतावनियों के रहते पं. नेहरू ने चीन को संयुक्त राष्ट्र संघ की सदस्यता दिलाने के लिए अथक परिश्रम किए। चीन के प्रति ऐसी प्रेम भावना लगभग स्थाई भावना का रूप ले चुकी थी जिसके परिणामस्वरूप चीन ने 1959 के मध्य में लद्दाख में कब्जा जमाना शुरू कर दिया और उसके बाद 1962 में जो लड़ाई हुई उसपर पूरे देश में किसी ने भी हार का कारण नहीं बताया।

परिचर्चा में वरिष्ठ पत्रकार श्री तरूण विजय ने कहा कि हिन्दुस्तथान का सैनिक हमेशा जीता है वह कभी नही हारा, अगर कोई हारा तो वो है हमारी कायरतापूर्ण राजनीति। श्री विजय ने 1962 में भारत चीन युद्ध में पंडित नेहरू को दोषी करार देते हुए कहा कि उस समय जनसंघ के नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने चीन की दुर्भावना को बार–बार पं. नेहरू को समझाने की कोशिश की लेकिन उनकी गलत नीतियों के दुष्परिणाम के कारण भारत को चीन से पराजय का सामना करना पड़ा था और आज कथित सेकुलर राजनीतिज्ञों के दुर्भावनाओं से ग्रसित होने के चलते राष्ट्रदोहियों को शरण और राष्ट्रभक्तों को प्रताड़ित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि 1962 में पं. नेहरू की सरकार 400 से ज्यादा कम्युनिस्ट

नेताओं को देशविरोधी कोर्यों के आरोप में गिरफ्तार किया था और रा.स्व.संघ के स्वयंसेवकों को चीन युद्ध में राष्ट्रसेवा के सम्मानार्थ पूर्ण गणवेश में 1963 की गणतंत्र दिवस परेड में शामिल होने का निमन्त्रण दिया था।

समारोह के मुख्य अतिथि ले. जन. पी.एन. कठपालिया ने कहा कि 1962 भारत–चीन के युद्ध में भारतीय सैनिक चीनियों पर पूरी तरह से हावी थे और यह कहना कि 'उस युद्ध में हमारे सैनिकों ने दुश्मन के सामने समर्पण कर दिया था' बकवास हैं। उन्होंने कहा कि जहां–जहां हमने युद्ध लड़ा वहां हमने फतह हासिल की। युद्ध में भारत की हार पर उन्होंने कहा कि युद्ध हम इसलिए हारे क्योंकि हमने लड़ाई की ही नहीं और जहां हमने लड़ाई की वहां जीत हासिल की। मिलिट्री इन्टेलिजेन्स के पूर्व महानिदेशक ने कहा कि भारतीय हार का सही कारण क्या था यह जाँच के द्वारा पता लगाना होगा। जन. कठपालिया ने कहा कि हमारे सैनिक हथियारों से सुसज्जित थे और युद्ध के लिए तैयार थे लेकिन इन सभी बातों के बावजूद हम युद्ध हार गये। यह हम सभी के लिए एक रहस्य बनकर रह गया, जिसकी तह तक जाँच होनी चाहिए।

कार्यक्रम में अतिथियों का आभार प्रकट करते हुए शोध अधिष्ठान के अध्यक्ष श्री केदार नाथ साहनी ने कहा कि हमारे लिए दुर्भाग्य की बात है कि जिन वीर पुरूषों के कारण ये देश सुरक्षित हैं हम उनको भूलते जा रहे हैं। श्री साहनी ने हिटलर और रूस की सेना के बीच हुए युद्ध का जिक्र करते हुए कहा कि जब हिटलर ने रूस पर आक्रमण किया तो उसको युद्ध में जीत का पूर्ण विश्वास था, लेकिन रूसी सैनिकों के जुझारूपन के चलते युद्ध में हिटलर को वापस लौटने पर मजबूर होना पड़ा था। रूस में उन वीर सैनिको से जुड़े तथ्यों को संजोकर एक संग्रहालय में रखा गया है, जिससे आने वाली पीढ़ी रूसी सैनिकों की वीरता याद रख सके। उन्होंने कहा कि ठीक उसी तरह चुशूल के वीर जिस वीरता से चीनीं सैनिको से लड़े वह देशभर में लोगों को पता रहना चाहिए। देश की सुरक्षा के लिए बहुत जरूरी है कि हम अपने वीरों को याद रखें और राजनेताओं की गलत नीतियों के खिलाफ आवाज उठाएं।

1962 में भारत–चीन युद्ध के समय भारतीय जवानों की परिस्थितियों का वर्णन करते हुए श्री साहनी ने कहा कि उस समय दिल्ली से भारतीय सैनिक नेकर, कॉटन का मोजा और रबर का जूता पहनकर बर्फ से घिरे पहाड़ों पर लड़ने जा रहे थे। उन्होंने कहा कि ऐसी सोच रखकर हम क्या कर सकते थे? लेकिन बिषम परिस्थितियों के बावजूद हमने डटकर मुकाबला किया। उन्होंने कहा कि दिल्ली में जनसंघ और रा. स्व.संघ के कार्यकर्ताओं द्वारा मोर्चे पर जा रहे जवानों को स्टेशन पर दी जाने वाली सेवाओं का भी जिक्र किया।

शोध अधिष्ठान के अध्यक्ष श्री केदार नाथ साहनी ने समारोह में उपस्थित अतिथियों को अंगवस्त्र और चुशूल के स्मारक का चित्र भेंट कर उन्हें सम्मानित किया। कार्यक्रम में प्रसिद्ध गायिका सुश्री मधुमिता द्वारा चुशूल के वीरों की याद में *'ऐ मेरे वतन के लोगों'*..... गीत प्रस्तुत किया गया। सभागार में उपस्थित लोगों ने चुशूल के वीरों की याद में दो मिनट का मौन रखकर शहीदों को श्रद्धांजलि दी। कार्यक्रम के अन्त में सुश्री मधुमिता जी के कला वृन्द में राष्ट्रगीत वन्दे मातरम का सामूहिक गायन किया गया।

डा0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान,
सभ्यता मूलक विमर्श एवं नीति अनुसंधान केन्द्र,
11, अशोक मार्ग, नई दिल्ली–110 001

संपर्क सूत्र :– 011– 23005735–14 / 23005700 (एक्सटे.714)
टेलीफैक्स :– 011–23382569 / 23005787
अणुडाक :– director@indiannationalism.org